



A close-up photograph of a manuscript page, showing a line of text in a script, likely Indic, with some red ink markings.

१ अथादिग्यावर्षडा कमात्रुताम ही अमिर्जला वह ॥ तावर्षसूचिने
काले च न स्थाप्यलि तावर्षे अमिर्जला गीयालायनहु व स्थापन गी
उग्रचक्रादवी च न स्थाप्यलि हव ॥ ३ ॥

३ सर्वे लक्ष्मीपुत्र ह्यर्थं सर्वभूतकृपाय च श्रुत्यादिद नम्य
ते ईशे देवि नमस्तुते ॥ न नाउत्तमया वाके ॥

1.287

ASHA ARCHIVES

20th Century
Halls

नवनायथाविधि॥ समस्तं वा यमालकधूने
क॥ यदवाप्तन यद्यं वा विकारं वा लिख॥ दधु सथं तिलिवाय
यजमान स्वस्तिका न॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥
११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥
२१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥
३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥
४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥
६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥
७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥
८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥
९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

वतिपुतिष्ठा॥ जपुपं मुल्लेन॥ लासालयं नं॥ श्रीसर्वकायपुपं
 समं नवनागदं लं॥ श्रीमसर्वकायपुपं॥ दिनपौत्र दवनं थं
 दिलिष्ठा॥ यनिवालमालक वजिष्ठा॥ यानसालं॥ सिंदुवादिनां॥
 सिवाल्लिपं यवत्यादिनां॥ सूर्यादि॥ पुत्रनमस्कान॥ न्यासाद्यं
 ययुजा मयुजा॥ वेंलासथिलहालं॥ **ॐ अष्टवावाह॥**
मालनीपा००॥ यत्र वत्यादि॥ पुत्रमउलाचन॥ इत्यवष्टा ययुजा॥
 अक्ष निवधनं १

वलिमुल्लं॥ वस्त्राद्यादि०॥ वृद्धजंदादि०॥ ज्यादि०॥ अग्निगीम
 दि०॥ हंतुकादि०॥ समय अजनादि वती निजीषष्टि महावलि
 ॥ रयदी यजयक्राय यनिवालसु पा० महामायादि॥ अक्रयुजा
 ॥ तथ्यकादि॥ अदनसिंदु वयुष्य॥ न्यासलीन॥ विसर्जनं॥
 धर्मनवनागदिविधि॥ **॥ गगोनि यक्रम विधि॥** वलिदक सवि
 जिष्ठा यानगीनं॥ जलमान॥ नवनागसल्लं स्वविद्य किथं माल

मानुनीप०७॥
॥ अथ नमिदु नकुमस्योन ॥ निवाचम ॥ अथ पुन नमस्का ना
दि ॥ इय वधु दगुलि ॥ नूद अंदादि ६ बुद्ध्यादि ६ अथादि ६ पुन
जलि वलि ॥ थं सान दक सं ॥ वलि नूतं अलितादि ममयवलि
॥ धूपदीपकयपुनिपा ॥ माहा मा अ ॥ अगुनीधादि ॥ नय्ये ॥ अनी
॥ विस्जर्ज ॥ ॥ ॥ विनि विवा विविधि ॥

॥ अथ मद्यु मीयुजा ॥ तगश्चान कलनीयुजा ॥ पटु वासनययथाय
कलेद्युदयुजा ॥ पश्च मद्यु मसि अं दनसिंदु नकुमस्योन पटीग
धूम्यादि निवद्यवलि ॥ निवाचम ॥ पुन नमस्का वं ॥ न्यास ॥ ॐ
॥ न्यास ॥ ॐ न्यादि ॥ अनाद्यपाययुजा ॥ अनाद्यपाययुजा ॥ अनाद्यपाययुजा ॥ अनाद्यपाययुजा ॥
विजायनादि ॥ विदुषासनययथाय ॥ विदुषासनययथाय ॥
ध्यान ॥ ॐ वृषसिंदु विनीय वं की नकु नंदु स निरी ॥ एक वरु विन
॥ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय । विष्णुलाकधरं देवं वनाकलनक्षत्रं ।
वामो नृसिंहादं वीरिभुजं कलनावना । हं मां नृनां भगवन् ।
नामो नृविश्वनाथे । उवाच । नीलधरं । सायकं पापप्रणाशनं । ध्यानं
युक्तं । अथा नृनां भगवन् । उवाच । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

नाथे नमः । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते
वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

यगापअद्वाना न॥ रुट संसकेयना न॥ थंदिनिनसिंदुव न॥ खंठि
न थोय ॥ सिनायमा ॥ अजमानसायथा ॥ माकुरुनपापि कृमनाथ
महासुमीपावृत्त्यवकायन सकसनीपा ० इयवउायेवाचुननि
मिथर्थकुरुषी ॥ यथाय अर्थ ॥ मांदांधवान ॥ दृजासतिथिस्यंग ॥
ॐ नवधुिकाये ॥ मरधुी ॥ इयवउाये ॥ मिथिनदुकिवाचन ॥ सेमयन
॥ तपोवाचनीन ॥ ॐ अद्यादि ॥ मृथ्याद्य ॥ मांदांधवान ॥ दुकलिकनवकायन ॥ इयव
मांदांधवान ॥ नाजसेदाल वसाली कानसेथी पुदामा ॥ यदिवान

ननातंजनगा घटसंकुतमदल जनाद्य लोकाकनमाभि ॥
उन्नमसकावना ॥ जलपाशज यथासुजा ॥ अगुदिकानामयुजा
॥ थनधिलवाक ॥ थंदिनिथिस्यंग ॥ अद्यवाचन ॥ ॐ अद्यादि ॥ ॐ दिवा
नवमहादेवीयवागमन जाधियध ॥ यावदगमिथय्यनं गावत्तुधि
वमाववै ॥ यावदुदुकाकी मादुनामदी वासि जलावडी ॥ गावत्तुसू
धिलैकालीयवकायाहि वागवा ॥ दूर्गसायनमैतानि दूर्गदुपीगय
कवी ॥ जगत्तागाविनाशयज्जनत्वं हिवागव ॥ सर्वलक्ष्यपुष्ट

थे मङ्गल नूतन कवी । जूझ मादि दरी चार्न दू (ने दु वी सि वा मव ॥
यजमान मय यथा मा सो क हल पा फिका मनो र्थे च न स्था वा सि वा म
दा ॥ धूप धर्म ॥ मालिनी पा ०७ ॥ ॥ मा ह नी ॥ गत ३ य ३ व नि ॥
मय ना सना य पा ॥ उ ॥ य दी पू र व दू क ना थ क धिल ज टा रं न
रा म न वि न र का ला म र व भु व न व २ ३ छ दि ज ग व न म नु ल म र धी ॥
य र थो प नी न व लि टू क २ व ॥ छि ता र्थ द द स व मे क ३ २ ३ ह र्वा ॥ उ ॥

मालिनी
कोली
मय न

न वा सना य पा य ॥ उ ॥ व दू क ना थि य त यं य थ ना म न भु व न व २
व दू क ना थि य त यं य थ ना म न भु व न व २
मालिनी न व ॥ य वि दू क ना थि य त यं य थ ना म न भु व न व २
य र थो प नी न व लि टू क २ व ॥ छि ता र्थ द द स व मे क ३ २ ३ ह र्वा ॥ उ ॥
य र थो प नी न व लि टू क २ व ॥ छि ता र्थ द द स व मे क ३ २ ३ ह र्वा ॥ उ ॥
य र थो प नी न व लि टू क २ व ॥ छि ता र्थ द द स व मे क ३ २ ३ ह र्वा ॥ उ ॥
य र थो प नी न व लि टू क २ व ॥ छि ता र्थ द द स व मे क ३ २ ३ ह र्वा ॥ उ ॥

लवनी (ग) लवनी उका क ना हं क नी गु क नी उ पु ४ य ३ य य सा ह न
 वा क नी ल रि उ ग दा सि नी थि र थ य य नान व लि तु क र म म पि
 द्वि क र्क तु ह ३ रु य सा हा ॥ उं पु मा स ना य या ॥ उं उं यो धा मि द्वि वा
 म धु र्थ व लि तु क र सा हा ॥ उं म धा स ना य या ॥ उं उं यो धा मि द्वि वा
 म ॥ उं यो धा क ल ग ॥ ल ध ना य व लि तु क र सा हा ॥ ग र्ज नी द धु यो मि न
 ह ग ज मू र्का ॥ ज व ल ग ॥ द वी पु र वि ल ष व न व नी नि क र्क र
 २ धां डी सा हा ३ ॥ कौ सा हा ३ ॥ यौ सा हा ३ ॥ ह्रौ सा हा ३ ॥

पालि रि न र्ग या द वी आ नि लो वे स क ल र य ह नी व क वा मू ठि का
 खा ॥ नो मि धा वि द्वि क र्क य व म म र्क क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३
 य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३
 स म य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३ क र्क य ३
 आ दि द व पा य ॥ व लि ॥ रि व लि स ॥ उं न ना स ना य या द ॥ उं कौ
 कौ ह्रौ क र्क य पाला य पा य ॥ व लि ॥ उं म थु वा स ना य या य ॥ धां डी क

आ सं व र्ता

आ दि द व
वि वा रि

चतुर्थी कानादं वीर्यसीदः सकलरुच्यहर्नमः लंकवर्माणि ॥ आसन
 नमः ॥ अथ चतुर्था महादेवीष्टी अष्टावर्गीतिवा । तपःधामी कुवाण
 सावित्रीकाटिसमप्रणा पीनवदकल्ललाशोभः ॥ विनयावाचुर्हसिनी
 । किरीटिकुलकात्री कशूत्रासहिनीयुवा । वनमात्मा विविध
 धरा उमा लावलविता । अष्टादश रुजा काना दिव्यवर्मा
 रुचिगा । स्वप्रवाहकध्वजं वजा कुंभववाधनं । उमनूय

लयाचुंच दक्षि (धनवित्राजिन)। रुटकंधनूह संय गदाय
 धेसु (धे) रिगं। या र्गं गऊ नि रुसुंच खदा मं कं ग या र्गं कं। वि
 न्द्रसूदा ग धमि सिद्धि सिंहासना योत्रि किता। न वं ध्या त्वा न हा द
 वी मे हा रु ग य ती न मा मुग ॥ (ग) आ ४ धा उ मं द रु ५ खदां ग
 उ म नू कं विना। नू द व धु य व धु य व धु य म व धु ना यिका। य
 धु य व धु य म वि व धु य नू या नि व धु का। न व सी व धु य व धु य म
 धी रु। नि य रं विना। वी व ना रा नू धं क सा नी ला धु का व धु य का।

[illegible][illegible]

सिद्धि
दमी

हृत्काला य सर्वं न पुमर्ध नायथापुं **ॐ कौं कौं कौं** कृपया ला
य सर्वकामदाययायु ॥ वलि ॥ **ॐ** निख प्रार्थन ॥ • ॥ सिद्धि लब्धि
यु ॥ न्यास ॥ **ॐ** कौं हृद धारय नमः ॥ **कौं** हौं नि प्रथं ०० ॥ **ॐ** कौं
स्वायवषट् ॥ **कौं** कृपयाय कौं ॥ **कौं** न नृपयाय वी षट् ॥ नमः
पुमदाय रुट् ॥ **ॐ** कौं प्राधावादि ० ॥ **ॐ** पुं ना सनायया ॥ **ॐ** सि
द्धि नमः ॥ **ॐ** न वा सनाय नमः ॥ ध्यान ॥ **ॐ** विं स साक्षि कुं

य गां विं न न्यास मुखानि वै ॥ वष्टु स्याद्द्वि नै गालि शुद्ध टिक
संनिर्ग ॥ **कौं** दं द्य सट्टु नृपां हान क युवमाष्टिगां ॥ निश्ले वन
दं द्य ॥ यन नृप द्य न मं वय ॥ वाम वाट् **ॐ** मं यो का ज्ञा य धानि
यना नृप ॥ **कौं** नृप मरु य मूळं नृपया नृव मं वय ॥ दक्ष वा
कूट गान्धुा यो नृवा धी व धी र्थ नय ध्या **ॐ** द पनी वा स्वाय
कर्त्तिकाम धी मी स्ति गां ॥ **ॐ** वं ध्या त्वाम ह दं वी सिद्धि लब्धि न

[illegible]

मन्त्राः १० पुण्या ग म आ न वा ये मी न ला रे धा ये वु द्वा य ना रि दी अ सि
गा झ ण्ड क णि ले न वा य था पा घृ जिं न व न ग लं ला ये च द्विका
सं दि नी मा हू ख नी अ न्न वं क नू न री न व थो पा । उं यं का ला
पू नी उ हा ये के व कि को मा नी उ क य ठु से न व थो पा घृ जिं
ठं अ ह हा सं मृ या ये ह न सि हि खं टी वै क्व वी ने मृ त्त मृ
क क्षा ष मे न वा य था पा घृ जिं न ज य ती कं ६० न ये रा हा :

श्रीकृष्णकी वावादी वावली ॥ कड नमस्ते नवव्यापाय ॥ ॐ ॐ ॐ
 अविनेनेलाये कीवक नऊकी माहदी वायेवें ॥ कड नमस्ते नव
 वयापाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ कामुकती हाये काल नारी कि पिनी वाम
 पुा की पु नी उा कड की वयासे नवव्यापाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ दंडी भाठें
 झाये की वया महान की सीमा नी अद सदा नसे नवाययी पा
 य ॥ गड नमस्ते नव ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ मह पें गाम नाय मय विद्या

ह्या नमस्ते २

कुलशा
वेन

ननाय २ मम सकल मनी नथा साधये २ ॥ मयिल लताय नय
 जायथा कि वलिष्ट २०० ॥ मृदु ॥ विद ॥ ० ॥ गगन कलम पुन
 ॥ गगन २ ॥ सश ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ आधावादि ॥ वृषास नाय पाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
 नाम पाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ अय मयुल मय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ठिकनिमै ल
 ॥ गगन २ ॥ मय ॥ दवद नम ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ मय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
 मय ॥ गगन २ ॥ मय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ मय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

दि० जयादि० अग्निनां गदि० हनुकादि११ लं द्यादि१०॥ इदया
दि० नमोदि१॥ वक्रादि१॥ सुखदादि१॥ पुंगादि१॥ अश्वत्थमा
दि० सकमुषि॥ अनन्तादि०॥ समुद्र१॥ आदित्यादि२॥ अशि
नादि२॥ विष्णुनादि२॥ पतिपक्ष१॥ मेषादि१॥ उम्मानिवि
शाकलापगिष्ठाय२॥ स्वर्गादि३॥ उहं रसं रसं दूधं कलभय
वनिं॥ विभक्त॥ • ॥ तनूद्वायुजा॥ उद्यौदय्यादि॥ आश

नादि। विं कालासनायया ॥ ध्यान ॥ विं वाक्का वसति लादवी जवा
जति मनागिनी ॥ जी वनी नग वृषा जरी निनया दिय वृषिनी ।
मदि नानन्द जेग न्या दल छु जू ध्व विषा ॥ यप्र रिशु ल वृषा ॥
दिहि मं म प्रलंगथा ॥ गदा पद्म वनी पा र्गि सवा दल विनाजिनी ।
॥ ४ ॥ का दू म दल ॥ वकपाल वृषा गरी वृषा ॥ नी नायना नय वि
वृषा मरु म विषा विषा ॥ दिय वृषा गरी यदं माल वली वृषि

गा॥ १॥ गपद्या सनादं वी वरु पद्यासनसि गा॥ २॥ वंधी या महा
 दं वी वा नूली दि य वृषिनी ॥ ३॥ सकि पाटका संधी या मृगा मृग
 को रुवा ॥ ४॥ ध्यान पृष्ठी ॥ ५॥ आवाहनादि ॥ गुंजलि ॥ अद्यो ना मुं व
 ॥ ६॥ मूं नूं पञ्च न नं धये पा ॥ ७॥ गवती मूल ॥ ८॥ उर्वरलि ॥ वांछः
 दयादि ॥ नूद वृष्ठादि ॥ वृक्षादि ॥ ज्यादि ॥ उं ज दं र स र क
 लई गरुडो न काये पाप ॥ वलि ॥ • ॥ गंगा महा काल वलि
 शानी मूलाद स य विन्द ॥

महा काल
 वलि

वृज नं ॥ १॥ मूंद दयादि ॥ २॥ ज्वाला नादि ॥ ३॥ महा पुंगा सना य
 पाप ॥ ४॥ ध्यान ॥ ५॥ महा पुंगा समान वृट्ट क क व लू सा ना ज न
 उका मृषिलो वन नी मं व वृषा ह नि ना वृट्ट ॥ ६॥ पिना दी कृषि ग
 कर्ण मूला काय महा द वी ॥ ७॥ वायु उर्म च नी धान सिंद उर्म व
 गुणि नी ॥ ८॥ वन सप्य स्थूल का वी नृप नादि वि ज वि नी ॥ ९॥ स्वप्न
 उं ट क रु स व स द्वा न पा पा विन्दू की ॥ १०॥ विष्णु का टि महा मं ज क व

धाहात्रासागिता। बुद्धविष्णुमंत्रादिविदिताष्टपदाका
 धानजम्बकशृङ्गावाष्टकावृक्षवृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै।
 नांकिलिकिलालावृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै।
 नकावृक्ष। नमामिष्टामहाकालेश्वरवृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै।
 वृक्ष। शृङ्गावृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै।
 वृक्ष। शृङ्गावृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै। शृङ्गावृक्षवृक्षलै।

[illegible]

नमो हितानाथकमसवदोममर्क ३ वलिष्टक २ स्वाहा ॐ
१० अ वर्यपूर्वपी ० धिका वें हं दुकमदा मे व वा यमदा ममा ना
धिपगय सगकि सदिगाय सप विवा नाय कं मीयुष्य धपदी यजुलि
वलि सदि गी ममगी न नागय २ सुवार्थ सिद्धि दस मर्क २ वलिष्टक
२ स्वाहा ॐ कं क वर्य आत्र पी ० धिका वें विपना नक मदा मे व वा
यमदा ममा नाधिपगय सगकि सदिगाय सप विवा नाय कं सदा

दीर्गसिद्धि मर्किकु व २०० ॐ अं अ वर्य आत्र पी ० धिका वें अत्रि वगा
लमदा मे व वा यमदा ममा नाधिपगय सगकि सदिगाय सप विवा
नाय अमदा दीना मेवर्ण मर्किकु व २०० ॐ अ वर्य मे मृग पी ० धिका
वें अत्रि जिह मदा मे व वा य मर्किकु व ॥ १० अ वर्य वात्र पी ० धिका
वें काला क मदा मे व वा य मर्किकु व ॥ १० अ वर्य वात्र पी ० धिका
वें कपाली मदा मे व वा यमदा म मर्किकु व ॥ १० अ वर्य वात्र पी ० धिका
वें कपाली मदा मे व वा यमदा म मर्किकु व ॥ १० अ वर्य वात्र पी ० धिका
वें कपाली मदा मे व वा यमदा म मर्किकु व ॥ १० अ वर्य वात्र पी ० धिका

[illegible]

सहि नति ॥ ४ ॥ उं जं मं जं जय की कृपा यड नमः से ववा य वा नाडी
कि सहिगा य विल्व वृक्षा यथा निगीन गति ॥ ५ ॥ उं जं पं जं च विग
कृपा य कलाल से ववा य वं ह्यदी सदि सहिगा य कर्जु वृक्षा य
थ निगीन गति ॥ ६ ॥ विं यं प्रका सक कृपा य की षण्ठ से ववा य
वामुत्तम कि सहिगा य अश्व क वृक्षा यथा निगीन गति सहि नति ॥
७ ॥ उं जं मं जं धली का रु कृपा य संहान से ववा य महा लक्ष्मी कि
सहिगा य दूत व वृक्षा यथा निगीन गति सहिगा य सागला य संग

चामुण्डा
वलि

स्यलिवालाय वं नैव श्रुतलिष्टकृष्णकिङ्कनस्यारु॥ ८ ॥ दधुम
दां विन्दु॥ ॥ चामुण्डा वलि वामना ॥ चंदनमादिन्या
सकृद्वेष्टेनासनायेवाय ॥ धाम ॥ उंजं चोत्रवृत्तानि श्रीदीपकं
वृषागिचतुष्का ॥ दुष्टाकलानवदनायंगम्यायविमंस्त्रिगा
निर्मामिकालनागीचमृष्टमालाविश्रयिता ॥ खड्गदंष्ट्रधनीदंष्ट्री
उमवृक्षद्वारुध्रविगी ॥ कर्णिकापालकलायविन्दुपापुधनागधा
। ववृत्रापिङ्गकंशावपिङ्गकपिङ्गलोचनी ॥ सप्याष्टिलवदंष्ट्री

षाद्रिहाराश्रवणश्रुतिगा ॥ दुर्द्वकंशी विवृषाकीचामुण्डापत्रमंथ
त्री ॥ धामपुष्पं ॥ उंजं चोत्रवृत्तानि श्रीदीपकं
उंजं वलिष्टकृष्णमंजुलिवलिपिनिगमृगा ॥ दुष्टदंष्ट्री
दुर्लभदंष्ट्री ॥ उंजं नंदोडादिशानजनाधनवृक्षमिविकाम
वृषी ॥ यवलिष्टकृष्ण ॥ नृदंष्ट्रीदिष्टदुष्टादिष्ट ॥ जयादि
॥ यजमानस्यजलिवलिशानिवलिमहायकं ॥ उंजं जयाव
विजयावैवजयाकीचापवाजिता ॥ नन्दाशुजासीमाकला

उवाह का सुथा ॥ ६ ॥ दिवा या निमहा या निमिदि या निगणधरी
साकिनी काल नागी वडुई क नी निम क नी ॥ ६ ॥ गनी या ही घणी
सु ना य व ना डी डली मिक ॥ नी घणी उमहा न द्या हा ला मूखी गथे
वव ॥ ६ ॥ पिना श्री हसि नी ये वय क नी धु र्नी मथा विष ह की सव
मिदि सुष्टि ले धा ग थै वव ॥ ६ ॥ दू का नी रा य नी दी घा धु सु की
कलह पिना ॥ मागी का क दु ही व ग थ वि धू व वा न की ॥ ६ ॥ वा क सी
धा ग ना दा व व का की विष वृ पिनी जय क नी नी ज वी न सी धु का नी

नन रा ज नी ॥ ६ ॥ वी व र द म हा काली क काली विहगान ना को ठला
नी म रा दा व वा य वें ग हा य न ना ॥ ६ ॥ वा नी व वें क वी नी दी व वि
का वी न्व नी गथा वा वा ही ना न सिंही व नी वा द नी व दु य वि का था
६ ॥ वें द द व म हा या नि व लि ट द नी गु ग स दा ॥ दू नी ग व वि था गि नी
या व लि ट द नी स र्व ना कि क वृ स म सि दि क व लु दू द द द वा हा ॥
या नि म दू ॥ वि दू ॥ ॥ वि न न दि न न म हा ॥ उ म म हा काली य
न म हा व लि ॥ उ म स क न क र पा ला य ज हा पि म ल न गाय न मो द
का द मू डा द सा ॥

[illegible][illegible]

वसं हिता वडुर्वाद्गुयादं वने ववा रुवता वितां। पृथक्कं न मन्त्र
पञ्च सर्वकं काशविन्दुः। अजनादि महादं गुणका नानं नमा म्याद
॥ ~~विजय~~ ~~का~~ ~~का~~ ~~का~~ अजनादि कश्याला यवलिं पृक्त २००॥
ॐ अजनादि महा नाना दमस्वी ममस्वी वना। ववती पुमथा वना
सो म्यासी मा महा वना। अया वविज या वैव अजिता या यवा जिता।
महा रुठा विवपा की लुक्का क्षी कान मा रुका जागदा नी सदा नी
वददा नी लुक्क ववती। पिया नी ववदा नी वअनी नी म्हा वि

नी॥ सदकाली स रुदा य रुदानी मा मरुदिका। हारिं म मरुमा न
हा कर्त्तिका याल धा विनी। हा विनी क महा धा मि लुक्क म् लुक्क म्
सनी॥ ॐ अजनादि महा दं गुयादि हा विनी धा मिनी सा वलिं पृक्त २००
॥ ॐ अजनादि वविज या वैव अजिता या यवा जिता। न दामदा
गथा सी मा काली वैवा रुका रुथा। दिय धा मि महा धा मि सिद्धि धा
नी गान्धरी। सा कि नी कालवा नी वडुर्वा कनी निता कनी। मली वा
धा विनी लुक्क वा यवना रुडवा मिका। सी वनी य महा नन्दा काला म्

श्री गणेशाय नमः। विष्णोर्दक्षिणे त्रैलोक्यकला धूर्तटी गथा। विष्णुसकस
वृत्तिद्विद्विष्टं कृतं यैव च। इकात्री शास्त्रादीनां धर्मादी कनकपि
या। मातङ्गी कालहरी च तथा विष्णु चानक की। वाकसी घातनाया च
त्रकादी विष्णुपिणी। जय कत्री श्री दुर्गा श्री दुर्गा श्री नवगोत्री ॥
वीरगद मद्रा काली काली विरुगानना। काटला श्री मद्रा च वाय
वंगद यानना। वादी च वेङ्ग वी श्री चन्द्रिका श्री स्वामी गथा। वावादी
नावासी च विरुगनी च सुषारिका। कदम्ब वी मद्रा च विरुगिनी

कुरु मे सदा॥ श्री श्री सविता गिना च। वलिष्टं कुरु सर्वना किं कुरु नम
सिद्धि कुरु कुरु कुरु॥ अलिबलि कुरु सर्व सविता च॥ वज्रवीर्य
रूपाद्रकायुक्तं यामि। विजय कुरु कुरु काम वृषं यून विष्णु नगगाजा
लयी॥ जय कुरु कुरु। मध्याय ॥ विष्णु चानक की। वाकसी घातनाया च
त्रकादी विष्णुपिणी। जय कत्री श्री दुर्गा श्री दुर्गा श्री नवगोत्री ॥
वीरगद मद्रा काली काली विरुगानना। काटला श्री मद्रा च वाय
वंगद यानना। वादी च वेङ्ग वी श्री चन्द्रिका श्री स्वामी गथा। वावादी
नावासी च विरुगनी च सुषारिका। कदम्ब वी मद्रा च विरुगिनी

धमवदुष्य (धमलुकेलाभमाने। सि। सी। गो। वे। क। वृ। क। ड। द। धि। सु।
शटन धमकालावगाले की वृषवृषुगिध्यागगलपूवववडाठि
यानेयधनने॥२॥ जावाथोथानमृथकूलपतिनगभकासवृष
सवृष। डऊ। ना। मरुह। संपदपठमरुकेलालदं। ग। पुदं। ग।
गामेनवाविजागपधुपगिनिलयंदमविध्यायववृषाम
लाध। प्रदं। म। मवृगप०। ननी। लाकिनी। साकिनीना॥ ३॥
काभी। व। वा। यदं। म। दुविठमलपथे। वृषवागंरुट्टकीवाथेह

कंदूक। ड। व। सि। वि। न। ज। क। सि। द्वि। क। ग। ज। ह। म। कालानि। यी। द। वि। का। यं
हिमनि। वि। लि। स। वं। का। छि। दं। ग। पु। या। ग। सी। वा। धु। म। ध। दं। ग। ह। ट। पु। न
नगवकोनवकासुकंवा॥३॥ कर्तुं। टं। को। छ। वा। म। ग। ध। वृ। व। वं। क
कुं। ऊ। की। क। लि। (अ। रि। ध। मं। ध। मम। ध। मृ। न। व। न। ग। य। नं। ग। क। वा। रा। य
कृ। वं। मृ। आ। नि। ऊ। म। धु। जा। म्वा। वि। वि। ध। वृ। ध। नृ। ग। मा। ग। व। क्क। णु। स। र्वा
न। सि। ह। कृ। ष। मृ। सि। ह। वि। वि। ध। वृ। ध। नृ। ग। दि। व्य। सि। द्वि। द। दं। नृ॥४॥
सं। प्र। म्वा। म। कृ। सि। द्वि। य। न। वृ। व। वि। स। नं। श्वं। ग। गि। ला। वनम्वा। ग। सु। कृ। मृ। नि



687

1212

पूजां वलि पलिग ऊयं सूरु नं सर्व विद्या। दीर्घायुष्यं कवित्वं न स
धि मुटिका पाद ककाम सिद्धि सूरु विद्या ददतु अलि वलि विमिगा र
वी नान्य युक्ता ॥ १ ॥ दृष्टं अजा विमा विप्र दन गी न गे ॥ १ ॥ विप्रु त्याग न
(१) वा न ज द्वा नं ज लोचं विद्य दय तुष्टु री वा धि र्म य म मूठा ॥ १ ॥
का न य की रु रु रु रु रु मि ते अ र्च य की पि व की रु रु रु रु रु मा
ला कि लि मि लि वि कि लि की ले रा वा मि न की ॥ १ ॥ साधु व्या का म
त्र या य न ल व न व स रु रु रु रु रु का न ना या ॥ १ ॥ उरि हा नी ल क र्छा

[illegible][illegible]

॥ आ वा रु ना दि उं द ना दि ॥ ॐ हं वं जं उं लं कं कूं हूं शूं लो मा वि
का ये हूं यं रं दं कल वा गी न्ध नी कल था न्ध वी न्ध वी कल की मा
नी वि हूं वा य ग ॥ ७ ॥ वलि ॥ ॐ हूं शूं कं कूं नी कूं डि कं ने ला कं म
ध धि प ग थं सह की मा नी वि हूं हूं आ कं द द स मं ०० ॥ वलि ॥ न ग व
ली मं ॥ हं रं मं रं वा य ॥ अ वा न व वं व नी नि ॥ यं उं न यूं ज ॥ वलि ॥
आ न्ध दि ऊ या दि नू द उं द ना दि ॥ दं वा द कं व द क म द ल नी दि ॥
वा मं ॥ ग (गं नं कं ग म द क न ॥ दं वा ॥ कं रं सि दि आ मू ल स

स्नानवलि॥ समयवलि॥ धूपदीपजपमंत्राः॥ दार्शनं॥ वाकनं॥
 मूलसंकीर्तनं॥ नवग्रहं॥ देवतादीर्घादि॥ अग्निषोडश्वेदनादि
 ॥ विमर्जनं॥ तथायसंकोचः॥ ॥ मूलयात्रेणस्नानं॥ अग्निषोडश्वेदनादि
 कायः॥ ॥ कथयदकथनं॥ शिखरपर्व॥ देवतादीर्घं॥ ॥ नारायणं॥
 निवर्तितवलिं॥ रुक्मवायं॥ कनककायमतेव॥ मूर्त्यभिक्तिः॥ गार्हपत्यं॥
 ॥ शिखरपर्व॥ अग्निषोडश्वेदनादि॥ ॥ अथदशमीयज्ञः॥ ॥ वलिमात्रं॥
 ॥ पूर्ववदेवार्चनं॥ संपूर्णं॥ धूपदीपजपमंत्राः॥ नवग्रहं॥

धमा सु वल्लभ वद विमर्जन ॥ वा ॥ उं द ॥ न द वि उ म मा गा स्व स्वा न म
 ति थ क यु जि गा ॥ पं व स न वा गी गा य व न वा वि ज या य व ॥ य क दि
 म व स म लं व धा ला थ ॥ न्या म ली न ॥ सु र्य मा दि ॥ ० ॥ व लि स
 प्र वि म र्ज न ॥ य कि वा न ॥ व प्र द्वा य ॥ व ग न ला दा ग सु च रि उ य
 ॥ व प्र वि य म प र्ज ॥ वा र्क ॥ उ य वि प द प द गा नू य व यो व गा व य क
 य म्प म्प दि ग म व व व वि व व क ल्या दि लो कं द पु म व नि स दा व य
 वी र्य पु सा वा स र्य द वा प र व व व ग ॥ ए य स व ठि का या थ ॥

म क ॥ उं द ॥ वा ज या ल र गे का मा र्क द हि य ज मा न न र्द यी ॥ अ य द ल
 व ॥ का लै र प्र द ल म दं थ वी ॥ उं द ॥ वि न र्ग क र म्प ज र्क र ॥ ० ॥
 ॥ उ प द म वा क र व सा द स स क न न वा क र्क स्या न ज पु र्क व क ॥
 क ल ग म रि व क द व र्क ॥ व प्र म थ व र्ग ॥ धा पु र्क ग या मा र्क नी स ॥
 उ वी म ल स थ व र्ग न व वा य स्या न क य थ व र्ग की र य र्ग ॥
 व धु गी थ र्क व ग र ग र्ग का ल क पा वि र्क र्क मा ल स्या व ॥ वि पु व न
 उ र्क र्क व र्क र्क प रि दि ॥ उ ग म र्क लि वि ग या क ल यि ता ग द म्

यामिवालिपी० म। मदा का यजति यं सुं कं वजिह वतं मसक धानसवाय २२ स्वस्था

पादु देयं जगत् न लेयं येन नैमिषे यन्ति ॥ दिव्या मने ॥ धृष्टदा
दिम दकि (स) मना पयि मं मळ लुड रु व मसि ॥ प्रासन धनका
वजाया या यवाय ॥ नमनं लाय ला माय द माय विजया यय
मरु पय विनागा य पुन वा न म मा यय ॥ लिदा व या व आक
मलु लरु था व रुठ मं पालं ॥ वप्रथम गं ॥ थं दिलि दर्जन
थं ठिलि सिंद व न मं य ॥ कं उजा पं रुठ मं लान ॥ प्रासन समय
॥ शोह ॥ कलंक काय ॥ ध मं या न व कूट या विधि ॥ ॥ ॥

कलि पा
ले
गमनं च
धलाभा
य

१ अथुथी कूट निर्मला धकि समं वृजा रिदा य माल ॥ जशादि ॥
तप्रहसं जन डय च आ दे य च न ॥ ॥ विधि यं वृजा ॥ विसर्जनं
॥ थानस वाय ॥ शोह ॥ ॥ वप्रथम गं ॥ रं ति य थुथी वृजा ॥ ॥
एयज सुन स्य स्वप्न सिद्धि जय काम नार्थ म लक्ष्मी पाव
धर्य म लोप ना थं श्री ३ र म व र्य रुत गा मूल धू य दी य न
वशादि सै क ल्य सिद्धि र सु ॥ ॥ स म रू ग २५ रु ड कृष्
अ मा वा गि कूट अ मा य वि र ति ना ज या न वि या थ स रू लि ॥

[illegible]

मध्ये श्रद्धा न धूप दीप पशु शिर्ष ल्या न व म्मा चित्तं संपादक दम
 मी प्रिया निव विगाह मा वरिष्ठा पा दु वं मा ध्याता उव वरु
 मन कद्वि गित वं वादू वसा दाने मं स्व प्रलं ठा दिग मं मदि य
 निद विनं यक वी अदि शुभं । मं वं लं का न लं वी न कु ल धं युज
 गी मणि मदि स वि न्दु मि दं चा व रि नं गी रि यु व नं ज न नी
 पा दु मा मय वरु ॥ वरु गी वा वना मा अ वं गी मि व नि रा क क
 नी ला हि मा रा धं वा रा दं म वं वं सु ठि क म नि नि रा वा द व

महिनाया ॥ यथाशाब्दवृत्तौ ॥ नृदनीसूनुजायप्रमाशास
॥ साहोहीपी० कवाचंदविदलमथनी पाहुनामसुवृत्तौ
॥ यीगाकायायनीमाहविमदिषमसकं यथायतिनंणी ॥ स्वप्र
वर्णयनकिंदितिगनयजयीगुलवकंसकाश्री ॥ ॐ ॥ यापयुनिः
वैरुवृदधनिवैवागको० ॥ यविन्दुंमूलैर्नैवाविककंयूनमदि
षविषाघागनीसूयवाकी ॥ यवीजयासाविजयाजितसखाय
माजिगाऊंरुनिकात्वनन ॥ यासंरुनीमाहिनीकानयेवया

कथंणीगामुदमाप्रवृत्तु ॥ यकाशाब्दवृत्तौ ॥ नृदनीसूनुजायप्रमाशास
माकानिनीगुलवागीवाहयासौषम ॥ यविमविमविमकवै
गकिवीर्गुलि ॥ यकमोप्रयवृत्तौ ॥ यविमविमविमकवै
नसुवकं वामं ॥ ॐ ॥ यवागिदनजकलककवायसकऊनी
या ॥ नैम ॥ यदयैरकिमुपमवकमयगीलतुलिकाडकीमा
गान्दवीनोमिनिर्गयसकवहवीरुदय्याककागी ॥
यावीवामरुवृत्तौ ॥ यविमविमविमकवै ॥

मात्री कीर्तिकामा चित्तु मधुमयं धैर्यं वीर्यं यमाना वावादी
वाद्ययनी पद्मनयनं नृपमाना गेन्द्री जाम्बुजा अपल
श्रीरुद्रगणसंहितामागमवः पूनरुक्तं **कौपीयं** नाथं सक
लस्य हृदयं त्रिकालं लक्ष्मीं विद्यां विद्विनाथं निजि वनः
कुवने कोषं गणधनुः । वायव्यावालवृष निविटनगनय
नन्दनं नकुकार्कं वेला न्याउति कां वैरुद्रगयह वलं नो मृदं
सर्वदा हि ॥ **॥ यद्वनं वैष्णव नमः नमः नमः नमः** नाविटनगनय

तिः समीपं धनाधिपस्य नवक कंठवधपितामह संशुभदा रव
नु ॥ **॥** ग्रामान्त्री सकलेंद्रशान्ति विमलानी कामना किपुदाः
विष्णुमारुतं नैक विष्णुजननी जाया विष्णुधामिका । ता वृष्णीम्
गवालपूर्व वविष्णुम विन्त्यलोक गुर्यं कालाष्टय्य ववृष्णा
मिजयगं गामिदिल श्रीयवा ॥ **॥ नमो वधाय सकल तीर्थजने**
नमः नमः सुखं पचनं वसुधैव कुटुम्बकम् । यद्गुणं जाह्न
विषयं मुनिभिः पुमैः नैकं नमः लिखितं किञ्चित् नमः

नि॥ ॥ लाका सिद्ध वरवर्ण जवक समनिजा उक वक्रा विनशा वि
द्युता साक कात्री विजुवन जननी दुःखदा विदुहनी ॥ वीवाणा
दय्यहनी वरमधुनक ग्रीक डिक गिपो सिद्धा मानका दर्शनानां
यत्र मयत्र पत्रापो दुसावा वली व॥ ॥ कककुला इत्यर्थं
धूगवज्जयने एकवर्क विनगु हाग वृक्षु सिद्ध स्वतहिकल
जवर्णने वल्यक वक्रि विष्णु विंनक गिबलने मित्रस
मैद्यो वर्यक काल मोर्ध विष्णुकनाथ विष्णु जनमथन

कालदेवं नमामि॥ ॥ कृपाभावाधिपत्यं सकलजगत्तुल्यं प्रथं
विश्वकर्माणां गता महं सु सकलकलतुल्यं त्रयं प्रकृतं ॥
आनन्दो विष्णुनाथक वरमगु निदयकुली निर्वृत्तौ मो वृषा ती
गं गिर्यय सिद्धुवनसदिग माहि मां कं गयालम ॥ अमिनाका
मद्रपासक लतुली गुणा मयकारि स्वरागा मद्रकक्ष लमा
लागलतगलठती वक्रवक्रा कवी या लिं गं धार्मिक याले नि
त्रम विविध तीसस्य तासु प्रसन्ना सकानां साधकानां मायिल

उत्तरी रुद्र कर्षि कायनिगता श्रीसिद्धिलक्ष्मीयदा
कंपूनसूटिकुंठंरवधतलानि(हावयायायहा)स
सानानवदुरवयंकजदुरि४निक्रियिनासर्वदाश्री
मंगयचमस्वांजुजादहा जुजायुगकिता पापुमहि
॥यद्युगाधिपूरासूटिकमधिति रापञ्चवकाशि
नशा जैलो कृमादयनी जुजदहा कयतादि जुव
सुवतामी॥ वामकापालसहस्राष्ट्रनववदमहावा

हामूर्त्तचरुनी घञ्जखद्वाम्स्वम्परयष्टलिसिद्धि
तासिद्धिलक्ष्मीयनाउ॥ ॥सिद्धिलक्ष्मी॥
सिद्धिपञ्चसद्व्ययुतिमावहक्तिविद्युत्यकाशयती
माधकिं धनामायुनेकासनसमाहितवालनुरवीको
मानी कारवपुमष्टे रमंगलाय॥ ह्रींसीपूर्वाधिकानी
अनुधगवनिता कालनाणी रवानी गेपूनी कृष्टिका
स्वानवनवक धियासिद्धिलक्ष्मीयना४श्रीसा ना

खापनाखागिउवनजननीजाजनाऊध्वनीत्वका
सानेकरुयासकलसृजननीनोमिदवीष्टीकुमानी॥
कोथहु॥ ॥ काकाशः कसमीनलः कदहनः का
पः कविष्टरना कवेष्म कजनाहनः कदनलिः
कोडः कदवासुनः कल्याकानलै रटनरटपुम
दितः कीसिद्धिआगध्वनीः कीजानाठ कनायकाविज
यमदवामेहा लेनवाः ॥ रुनया ॥ ॥ याष्टीसुयह

गवतीपनमात्मनूयीसुष्टिस्थितिपनयविष्टयास
दहा। संसानहित नमार्कनूलीसमस्तः ॥ श्रीमददाउ
नववाचितानाजलक्षी ॥ रगवतीया ॥ ॥ सिन्दूर
साहुमदमच्छितनकेकुरैतिजिज्ञानीघनयथाधन
दहिलक्षी। विवृत्तुभनवनभादकसाहुसुर्णवाया
दयंगलयगिसिक्तैसाथदागा॥ मनीविनायकया॥
॥ जेम्भसुनसमापुडवदुकुसुसाहितं। (ध्वनव

वर्षे पिनेर्ण च सर्वलक्ष्य संयुग। अथ गवर्षे पूर्वव
कुंददि (अथ वृष साहितं। वृषस्य दक्षि (अथ कर्म
नद निगसुखा। दनिगस्य दक्षि (अथ वीतं मुका रानध
साहितं। बद्ध कुंच महा तेजं सितवर्षं तद्दृक्की। हा
दक्षि दक्षि दक्षि वा दक्षि सवो रानध हविर्ण अक्ष
उमर्ण यम वनदा चाक्ष साहितं। मूलहर्ण उजादक्ष
नात्ता विधि विना धातं। वाभवन उपाक्ष वदाम् व

सुकं गथा। अथ यल्लु कंच वदह्य स कादि संयुग।
गं गमयुगी गजवर्क। ॐ अथ ययि यदक्षि न। सर्वं ग
य विनिर्म कं सर्व काम हं लपद। अथ वक्ष्वा तामहा द
वो मन वि धि न मा सुते ॥ सन विना य कथा ध्यान ॥ ॥
नैजं गौ गौ गौ (गौ (गौ गौ गौ धीं मन विधि ना ऊ अथ य
वा दक्षि को जा ॥ ॥ गौ जं धी लि ॥ ॥ अथ लामा वली
वा स हनु मा ध्व वि लो वध ॥ कथय न उ नाम ध्व मा क

लुयायनम॥समु॥ ॥ जैका नासनमात्रुटीवजय
 भ्रापनिहिंगा॥सिद्धिमात न नित्यधीकृतिनेमाश्रुह॥
 वेधानत्रयमहाशिव सर्वधाफुदयकनि। लकुर्यावन
 देवविगाहिमाधनलमगती॥सुनासुनाचिह्नदविमि
 हगलेचसवित॥जाश्रयापह नदविगाहिमाधन
 लमगती॥



अस्वकागाथनम॥वलथनम॥श्यासाथनम॥लुनमानाथ
 नम॥शिरसीषणथनम॥कृथाथनम॥यनधुनामाथनम॥
 मानकलुनम॥मृ॥३॥सयु॥ ॥यजमानस्य खप्रसिद्धिज
 यकामकामनार्थमदानवमीयावृक्षदुर्जनाधनल्लदेवनि
 देवतकागयस्यद्यादयिक॥१॥सम॥३॥थोषकृष्ण॥१०॥यथव्य
 कृयाविरुतिनाजयाकायजुननयादिहावियादिशभा॥लुन॥॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



अथदि नष्टास न अमि ॥
यद्वस ॥ धन ॥
दक्षीनस ॥ लाम ॥
यद्विमस ॥ का ॥
उतुस ॥ धनु ॥
धमदिगुस न ॥ का
ननयामि नः यामि न
यय ॥ न नव धन
स कामि न स रि द ॥

व का अ नो न धु ॥
माद ध री नं वा ॥
कोम री म क ॥
वि व वि क य नु ॥
वा गदि म म ॥
०० नु य नो पु न ॥
नो मु दा म र ॥
मा लो न क्षी न यु ॥
ध मि मि आ धा या आ द व म
न ग म धाः स र्क र न य म ॥
व कः क म न ॥
वि न र दी डा ॥
का य ग श न व ॥
ला म र्का क न ॥
क ग धः र न व ॥
क न धः न न व मि ॥
क मिः को मि ॥
क मि धः मि दि ल क्षी ॥
मि र्क नो मि धः द वी
स न म र नः य र ध ध मि
का या या रु न ॥



ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ



ॐ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः

𐎧𐎠𐎡𐎢𐎣𐎤𐎥𐎦𐎧𐎨𐎩𐎪𐎫𐎬𐎭𐎮𐎯𐎰𐎱𐎲𐎳𐎴𐎵𐎶𐎷𐎸𐎹𐎺𐎻𐎼𐎽𐎾𐎿𐏀𐏁𐏂𐏃𐏄𐏅𐏆𐏇𐏈𐏉𐏊𐏋𐏌𐏍𐏎𐏏𐏐𐏑𐏒𐏓𐏔𐏕𐏖𐏗𐏘𐏙𐏚𐏛𐏜𐏝𐏞𐏟𐏠𐏡𐏢𐏣𐏤𐏥𐏦𐏧𐏨𐏩𐏪𐏫𐏬𐏭𐏮𐏯𐏰𐏱𐏲𐏳𐏴𐏵𐏶𐏷𐏸𐏹𐏺𐏻𐏼𐏽𐏾𐏿𐐀𐐁𐐂𐐃𐐄𐐅𐐆𐐇𐐈𐐉𐐊𐐋𐐌𐐍𐐎𐐏𐐐𐐑𐐒𐐓𐐔𐐕𐐖𐐗𐐘𐐙𐐚𐐛𐐜𐐝𐐞𐐟𐐠𐐡𐐢𐐣𐐤𐐥𐐦𐐧𐐨𐐩𐐪𐐫𐐬𐐭𐐮𐐯𐐰𐐱𐐲𐐳𐐴𐐵𐐶𐐷𐐸𐐹𐐺𐐻𐐼𐐽𐐾𐐿𐑀𐑁𐑂𐑃𐑄𐑅𐑆𐑇𐑈𐑉𐑊𐑋𐑌𐑍𐑎𐑏𐑐𐑑𐑒𐑓𐑔𐑕𐑖𐑗𐑘𐑙𐑚𐑛𐑜𐑝𐑞𐑟𐑠𐑡𐑢𐑣𐑤𐑥𐑦𐑧𐑨𐑩𐑪𐑫𐑬𐑭𐑮𐑯𐑰𐑱𐑲𐑳𐑴𐑵𐑶𐑷𐑸𐑹𐑺𐑻𐑼𐑽𐑾𐑿𐒀𐒁𐒂𐒃𐒄𐒅𐒆𐒇𐒈𐒉𐒊𐒋𐒌𐒍𐒎𐒏𐒐𐒑𐒒𐒓𐒔𐒕𐒖𐒗𐒘𐒙𐒚𐒛𐒜𐒝𐒞𐒟𐒠𐒡𐒢𐒣𐒤𐒥𐒦𐒧𐒨𐒩𐒪𐒫𐒬𐒭𐒮𐒯𐒰𐒱𐒲𐒳𐒴𐒵𐒶𐒷𐒸𐒹𐒺𐒻𐒼𐒽𐒾𐒿𐓀𐓁𐓂𐓃𐓄𐓅𐓆𐓇𐓈𐓉𐓊𐓋𐓌𐓍𐓎𐓏𐓐𐓑𐓒𐓓𐓔𐓕𐓖𐓗𐓘𐓙𐓚𐓛𐓜𐓝𐓞𐓟𐓠𐓡𐓢𐓣𐓤𐓥𐓦𐓧𐓨𐓩𐓪𐓫𐓬𐓭𐓮𐓯𐓰𐓱𐓲𐓳𐓴𐓵𐓶𐓷𐓸𐓹𐓺𐓻𐓼𐓽𐓾𐓿𐔀𐔁𐔂𐔃𐔄𐔅𐔆𐔇𐔈𐔉𐔊𐔋𐔌𐔍𐔎𐔏𐔐𐔑𐔒𐔓𐔔𐔕𐔖𐔗𐔘𐔙𐔚𐔛𐔜𐔝𐔞𐔟𐔠𐔡𐔢𐔣𐔤𐔥𐔦𐔧𐔨𐔩𐔪𐔫𐔬𐔭𐔮𐔯𐔰𐔱𐔲𐔳𐔴𐔵𐔶𐔷𐔸𐔹𐔺𐔻𐔼𐔽𐔾𐔿𐕀𐕁𐕂𐕃𐕄𐕅𐕆𐕇𐕈𐕉𐕊𐕋𐕌𐕍𐕎𐕏𐕐𐕑𐕒𐕓𐕔𐕕𐕖𐕗𐕘𐕙𐕚𐕛𐕜𐕝𐕞𐕟𐕠𐕡𐕢𐕣𐕤𐕥𐕦𐕧𐕨𐕩𐕪𐕫𐕬𐕭𐕮𐕯𐕰𐕱𐕲𐕳𐕴𐕵𐕶𐕷𐕸𐕹𐕺𐕻𐕼𐕽𐕾𐕿𐖀𐖁𐖂𐖃𐖄𐖅𐖆𐖇𐖈𐖉𐖊𐖋𐖌𐖍𐖎𐖏𐖐𐖑𐖒𐖓𐖔𐖕𐖖𐖗𐖘𐖙𐖚𐖛𐖜𐖝𐖞𐖟𐖠𐖡𐖢𐖣𐖤𐖥𐖦𐖧𐖨𐖩𐖪𐖫𐖬𐖭𐖮𐖯𐖰𐖱𐖲𐖳𐖴𐖵𐖶𐖷𐖸𐖹𐖺𐖻𐖼𐖽𐖾𐖿𐗀𐗁𐗂𐗃𐗄𐗅𐗆𐗇𐗈𐗉𐗊𐗋𐗌𐗍𐗎𐗏𐗐𐗑𐗒𐗓𐗔𐗕𐗖𐗗𐗘𐗙𐗚𐗛𐗜𐗝𐗞𐗟𐗠𐗡𐗢𐗣𐗤𐗥𐗦𐗧𐗨𐗩𐗪𐗫𐗬𐗭𐗮𐗯𐗰𐗱𐗲𐗳𐗴𐗵𐗶𐗷𐗸𐗹𐗺𐗻𐗼𐗽𐗾𐗿𐘀𐘁𐘂𐘃𐘄𐘅𐘆𐘇𐘈𐘉𐘊𐘋𐘌𐘍𐘎𐘏𐘐𐘑𐘒𐘓𐘔𐘕𐘖𐘗𐘘𐘙𐘚𐘛𐘜𐘝𐘞𐘟𐘠𐘡𐘢𐘣𐘤𐘥𐘦𐘧𐘨𐘩𐘪𐘫𐘬𐘭𐘮𐘯𐘰𐘱𐘲𐘳𐘴𐘵𐘶𐘷𐘸𐘹𐘺𐘻𐘼𐘽𐘾𐘿𐙀𐙁𐙂𐙃𐙄𐙅𐙆𐙇𐙈𐙉𐙊𐙋𐙌𐙍𐙎𐙏𐙐𐙑𐙒𐙓𐙔𐙕𐙖𐙗𐙘𐙙𐙚𐙛𐙜𐙝𐙞𐙟𐙠𐙡𐙢𐙣𐙤𐙥𐙦𐙧𐙨𐙩𐙪𐙫𐙬𐙭𐙮𐙯𐙰𐙱𐙲𐙳𐙴𐙵𐙶𐙷𐙸𐙹𐙺𐙻𐙼𐙽𐙾𐙿𐚀𐚁𐚂𐚃𐚄𐚅𐚆𐚇𐚈𐚉𐚊𐚋𐚌𐚍𐚎𐚏𐚐𐚑𐚒𐚓𐚔𐚕𐚖𐚗𐚘𐚙𐚚𐚛𐚜𐚝𐚞𐚟𐚠𐚡𐚢𐚣𐚤𐚥𐚦𐚧𐚨𐚩𐚪𐚫𐚬𐚭𐚮𐚯𐚰𐚱𐚲𐚳𐚴𐚵𐚶𐚷𐚸𐚹𐚺𐚻𐚼𐚽𐚾𐚿𐛀𐛁𐛂𐛃𐛄𐛅𐛆𐛇𐛈𐛉𐛊𐛋𐛌𐛍𐛎𐛏𐛐𐛑𐛒𐛓𐛔𐛕𐛖𐛗𐛘𐛙𐛚𐛛𐛜𐛝𐛞𐛟𐛠𐛡𐛢𐛣𐛤𐛥𐛦𐛧𐛨𐛩𐛪𐛫𐛬𐛭𐛮𐛯𐛰𐛱𐛲𐛳𐛴𐛵𐛶𐛷𐛸𐛹𐛺𐛻𐛼𐛽𐛾𐛿𐜀𐜁𐜂𐜃𐜄𐜅𐜆𐜇𐜈𐜉𐜊𐜋𐜌𐜍𐜎𐜏𐜐𐜑𐜒𐜓𐜔𐜕𐜖𐜗𐜘𐜙𐜚𐜛𐜜𐜝𐜞𐜟𐜠𐜡𐜢𐜣𐜤𐜥𐜦𐜧𐜨𐜩𐜪𐜫𐜬𐜭𐜮𐜯𐜰𐜱𐜲𐜳𐜴𐜵𐜶𐜷𐜸𐜹𐜺𐜻𐜼𐜽𐜾𐜿𐝀𐝁𐝂𐝃𐝄𐝅𐝆𐝇𐝈𐝉𐝊𐝋𐝌𐝍𐝎𐝏𐝐𐝑𐝒𐝓𐝔𐝕𐝖𐝗𐝘𐝙𐝚𐝛𐝜𐝝𐝞𐝟𐝠𐝡𐝢𐝣𐝤𐝥𐝦𐝧𐝨𐝩𐝪𐝫𐝬𐝭𐝮𐝯𐝰𐝱𐝲𐝳𐝴𐝵𐝶𐝷𐝸𐝹𐝺𐝻𐝼𐝽𐝾𐝿𐞀𐞁𐞂𐞃𐞄𐞅𐞆𐞇𐞈𐞉𐞊𐞋𐞌𐞍𐞎𐞏𐞐𐞑𐞒𐞓𐞔𐞕𐞖𐞗𐞘𐞙𐞚𐞛𐞜𐞝𐞞𐞟𐞠𐞡𐞢𐞣𐞤𐞥𐞦𐞧𐞨𐞩𐞪𐞫𐞬𐞭𐞮𐞯𐞰𐞱𐞲𐞳𐞴𐞵𐞶𐞷𐞸𐞹𐞺𐞻𐞼𐞽𐞾𐞿𐟀𐟁𐟂𐟃𐟄𐟅𐟆𐟇𐟈𐟉𐟊𐟋𐟌𐟍𐟎𐟏𐟐𐟑𐟒𐟓𐟔𐟕𐟖𐟗𐟘𐟙𐟚𐟛𐟜𐟝𐟞𐟟𐟠𐟡𐟢𐟣𐟤𐟥𐟦𐟧𐟨𐟩𐟪𐟫𐟬𐟭𐟮𐟯𐟰𐟱𐟲𐟳𐟴𐟵𐟶𐟷𐟸𐟹𐟺𐟻𐟼𐟽𐟾𐟿𐠀𐠁𐠂𐠃𐠄𐠅𐠆𐠇𐠈𐠉𐠊𐠋𐠌𐠍𐠎𐠏𐠐𐠑𐠒𐠓𐠔𐠕𐠖𐠗𐠘𐠙𐠚𐠛𐠜𐠝𐠞𐠟𐠠𐠡𐠢𐠣𐠤𐠥𐠦𐠧𐠨𐠩𐠪𐠫𐠬𐠭𐠮𐠯𐠰𐠱𐠲𐠳𐠴𐠵𐠶𐠷𐠸𐠹𐠺𐠻𐠼𐠽𐠾𐠿𐡀𐡁𐡂𐡃𐡄𐡅𐡆𐡇𐡈𐡉𐡊𐡋𐡌𐡍𐡎𐡏𐡐𐡑𐡒𐡓𐡔𐡕𐡖𐡗𐡘𐡙𐡚𐡛𐡜𐡝𐡞𐡟𐡠𐡡𐡢𐡣𐡤𐡥𐡦𐡧𐡨𐡩𐡪𐡫𐡬𐡭𐡮𐡯𐡰𐡱𐡲𐡳𐡴𐡵𐡶𐡷𐡸𐡹𐡺𐡻𐡼𐡽𐡾𐡿𐢀𐢁𐢂𐢃𐢄𐢅𐢆𐢇𐢈𐢉𐢊𐢋𐢌𐢍𐢎𐢏𐢐𐢑𐢒𐢓𐢔𐢕𐢖𐢗𐢘𐢙𐢚𐢛𐢜𐢝𐢞𐢟𐢠𐢡𐢢𐢣𐢤𐢥𐢦𐢧𐢨𐢩𐢪𐢫𐢬𐢭𐢮𐢯𐢰𐢱𐢲𐢳𐢴𐢵𐢶𐢷𐢸𐢹𐢺𐢻𐢼𐢽𐢾𐢿𐣀𐣁𐣂𐣃𐣄𐣅𐣆𐣇𐣈𐣉𐣊𐣋𐣌𐣍𐣎𐣏𐣐𐣑𐣒𐣓𐣔𐣕𐣖𐣗𐣘𐣙𐣚𐣛𐣜𐣝𐣞𐣟𐣠𐣡𐣢𐣣𐣤𐣥𐣦𐣧𐣨𐣩𐣪𐣫𐣬𐣭𐣮𐣯𐣰𐣱𐣲𐣳𐣴𐣵𐣶𐣷𐣸𐣹𐣺𐣻𐣼𐣽𐣾𐣿𐤀𐤁𐤂𐤃𐤄𐤅𐤆𐤇𐤈𐤉𐤊𐤋𐤌𐤍𐤎𐤏𐤐𐤑𐤒𐤓𐤔𐤕𐤖𐤗𐤘𐤙𐤚𐤛𐤜𐤝𐤞𐤟𐤠𐤡𐤢𐤣𐤤𐤥𐤦𐤧𐤨𐤩𐤪𐤫𐤬𐤭𐤮𐤯𐤰𐤱𐤲𐤳𐤴𐤵𐤶𐤷𐤸𐤹𐤺𐤻𐤼𐤽𐤾𐤿𐥀𐥁𐥂𐥃𐥄𐥅𐥆𐥇𐥈𐥉𐥊𐥋𐥌𐥍𐥎𐥏𐥐𐥑𐥒𐥓𐥔𐥕𐥖𐥗𐥘𐥙𐥚𐥛𐥜𐥝𐥞𐥟𐥠𐥡𐥢𐥣𐥤𐥥𐥦𐥧𐥨𐥩𐥪𐥫𐥬𐥭𐥮𐥯𐥰𐥱𐥲𐥳𐥴𐥵𐥶𐥷𐥸𐥹𐥺𐥻𐥼𐥽𐥾𐥿𐦀𐦁𐦂𐦃𐦄𐦅𐦆𐦇𐦈𐦉𐦊𐦋𐦌𐦍𐦎𐦏𐦐𐦑𐦒𐦓𐦔𐦕𐦖𐦗𐦘𐦙𐦚𐦛𐦜𐦝𐦞𐦟𐦠𐦡𐦢𐦣𐦤𐦥𐦦𐦧𐦨𐦩𐦪𐦫𐦬𐦭𐦮𐦯𐦰𐦱𐦲𐦳𐦴𐦵𐦶𐦷𐦸𐦹𐦺𐦻𐦼𐦽𐦾𐦿𐧀𐧁𐧂𐧃𐧄𐧅𐧆𐧇𐧈𐧉𐧊𐧋𐧌𐧍𐧎𐧏𐧐𐧑𐧒𐧓𐧔𐧕𐧖𐧗𐧘𐧙𐧚𐧛𐧜𐧝𐧞𐧟𐧠𐧡𐧢𐧣𐧤𐧥𐧦𐧧𐧨𐧩𐧪𐧫𐧬𐧭𐧮𐧯𐧰𐧱𐧲𐧳𐧴𐧵𐧶𐧷𐧸𐧹𐧺𐧻𐧼𐧽𐧾𐧿𐨀𐨁𐨂𐨃𐨄𐨅𐨆𐨇𐨈𐨉𐨊𐨋𐨌𐨍𐨎𐨏𐨐𐨑𐨒𐨓𐨔𐨕𐨖𐨗𐨘𐨙𐨚𐨛𐨜𐨝𐨞𐨟𐨠𐨡𐨢𐨣𐨤𐨥𐨦𐨧𐨨𐨩𐨪𐨫𐨬𐨭𐨮𐨯𐨰𐨱𐨲𐨳𐨴𐨵𐨶𐨷𐨹𐨺𐨸𐨻𐨼𐨽𐨾𐨿𐩀𐩁𐩂𐩃𐩄𐩅𐩆𐩇𐩈𐩉𐩊𐩋𐩌𐩍𐩎𐩏𐩐𐩑𐩒𐩓𐩔𐩕𐩖𐩗𐩘𐩙𐩚𐩛𐩜𐩝𐩞𐩟𐩠𐩡𐩢𐩣𐩤𐩥𐩦𐩧𐩨𐩩𐩪𐩫𐩬𐩭𐩮𐩯𐩰𐩱𐩲𐩳𐩴𐩵𐩶𐩷𐩸𐩹𐩺𐩻𐩼𐩽𐩾𐩿𐪀𐪁𐪂𐪃𐪄𐪅𐪆𐪇𐪈𐪉𐪊𐪋𐪌𐪍𐪎𐪏𐪐𐪑𐪒𐪓𐪔𐪕𐪖𐪗𐪘𐪙𐪚𐪛𐪜𐪝𐪞𐪟𐪠𐪡𐪢𐪣𐪤𐪥𐪦𐪧𐪨𐪩𐪪𐪫𐪬𐪭𐪮𐪯𐪰𐪱𐪲𐪳𐪴𐪵𐪶𐪷𐪸𐪹𐪺𐪻𐪼𐪽𐪾𐪿𐫀𐫁𐫂𐫃𐫄𐫅𐫆𐫇𐫈𐫉𐫊𐫋𐫌𐫍𐫎𐫏𐫐𐫑𐫒𐫓𐫔𐫕𐫖𐫗𐫘𐫙𐫚𐫛𐫜𐫝𐫞𐫟𐫠𐫡𐫢𐫣𐫤𐫦𐫥𐫧𐫨𐫩𐫪𐫫𐫬𐫭𐫮𐫯𐫰𐫱𐫲𐫳𐫴𐫵𐫶𐫷𐫸𐫹𐫺𐫻𐫼𐫽𐫾𐫿𐬀𐬁𐬂𐬃𐬄𐬅𐬆𐬇𐬈𐬉𐬊𐬋𐬌𐬍𐬎𐬏𐬐𐬑𐬒𐬓𐬔𐬕𐬖𐬗𐬘𐬙𐬚𐬛𐬜𐬝𐬞𐬟𐬠𐬡𐬢𐬣𐬤𐬥𐬦𐬧𐬨𐬩𐬪𐬫𐬬𐬭𐬮𐬯𐬰𐬱𐬲𐬳𐬴𐬵𐬶𐬷𐬸𐬹𐬺𐬻𐬼𐬽𐬾𐬿𐭀𐭁𐭂𐭃𐭄𐭅𐭆𐭇𐭈𐭉𐭊𐭋𐭌𐭍𐭎𐭏𐭐𐭑𐭒𐭓𐭔𐭕𐭖𐭗𐭘𐭙𐭚𐭛𐭜𐭝𐭞𐭟𐭠𐭡𐭢𐭣𐭤𐭥𐭦𐭧𐭨𐭩𐭪𐭫𐭬𐭭𐭮𐭯𐭰𐭱𐭲𐭳𐭴𐭵𐭶𐭷𐭸𐭹𐭺𐭻𐭼𐭽𐭾𐭿𐮀𐮁𐮂𐮃𐮄𐮅𐮆𐮇𐮈𐮉𐮊𐮋𐮌𐮍𐮎𐮏𐮐𐮑𐮒𐮓𐮔𐮕𐮖𐮗𐮘𐮙𐮚𐮛𐮜𐮝𐮞𐮟𐮠𐮡𐮢𐮣𐮤𐮥𐮦𐮧𐮨𐮩𐮪𐮫𐮬𐮭𐮮𐮯𐮰𐮱𐮲𐮳𐮴𐮵𐮶𐮷𐮸𐮹𐮺𐮻𐮼𐮽𐮾𐮿𐯀𐯁𐯂𐯃𐯄𐯅𐯆𐯇𐯈𐯉𐯊𐯋𐯌𐯍𐯎𐯏𐯐𐯑𐯒𐯓𐯔𐯕𐯖𐯗𐯘𐯙𐯚𐯛𐯜𐯝𐯞𐯟𐯠𐯡𐯢𐯣𐯤𐯥𐯦𐯧𐯨𐯩𐯪𐯫𐯬𐯭𐯮𐯯𐯰𐯱𐯲𐯳𐯴𐯵𐯶𐯷𐯸𐯹𐯺𐯻𐯼𐯽𐯾𐯿𐰀𐰁𐰂𐰃𐰄𐰅𐰆𐰇𐰈𐰉𐰊𐰋𐰌𐰍𐰎𐰏𐰐𐰑𐰒𐰓𐰔𐰕𐰖𐰗𐰘𐰙𐰚𐰛𐰜𐰝𐰞𐰟𐰠𐰡𐰢𐰣𐰤𐰥𐰦𐰧𐰨𐰩𐰪𐰫𐰬𐰭𐰮𐰯𐰰𐰱𐰲𐰳𐰴𐰵𐰶𐰷𐰸𐰹𐰺𐰻𐰼𐰽𐰾𐰿𐱀𐱁𐱂𐱃𐱄𐱅𐱆𐱇𐱈𐱉𐱊𐱋𐱌𐱍𐱎𐱏𐱐𐱑𐱒𐱓𐱔𐱕𐱖𐱗𐱘𐱙𐱚𐱛𐱜𐱝𐱞𐱟𐱠𐱡𐱢𐱣𐱤𐱥𐱦𐱧𐱨𐱩𐱪𐱫𐱬𐱭𐱮𐱯𐱰𐱱𐱲𐱳𐱴𐱵𐱶𐱷𐱸𐱹𐱺𐱻𐱼𐱽𐱾𐱿𐲀𐲁𐲂𐲃𐲄𐲅𐲆𐲇𐲈𐲉𐲊𐲋𐲌𐲍𐲎𐲏𐲐𐲑𐲒𐲓𐲔𐲕𐲖𐲗𐲘𐲙𐲚𐲛𐲜𐲝𐲞𐲟𐲠𐲡𐲢𐲣𐲤𐲥𐲦𐲧𐲨𐲩𐲪𐲫𐲬𐲭𐲮𐲯𐲰𐲱𐲲𐲳𐲴𐲵𐲶𐲷𐲸𐲹𐲺𐲻𐲼𐲽𐲾𐲿𐳀𐳁𐳂𐳃𐳄𐳅𐳆𐳇𐳈𐳉𐳊𐳋𐳌𐳍𐳎𐳏𐳐𐳑𐳒𐳓𐳔𐳕𐳖𐳗𐳘𐳙𐳚𐳛𐳜𐳝𐳞𐳟𐳠𐳡𐳢𐳣𐳤𐳥𐳦𐳧𐳨𐳩𐳪𐳫𐳬𐳭𐳮𐳯𐳰𐳱𐳲𐳳𐳴𐳵𐳶𐳷𐳸𐳹𐳺𐳻𐳼𐳽𐳾𐳿𐴀𐴁𐴂𐴃𐴄𐴅𐴆𐴇𐴈𐴉𐴊𐴋𐴌𐴍𐴎𐴏𐴐𐴑𐴒𐴓𐴔𐴕𐴖𐴗𐴘𐴙𐴚𐴛𐴜𐴝𐴞𐴟𐴠𐴡𐴢𐴣𐴤𐴥𐴦𐴧𐴨𐴩𐴪𐴫𐴬𐴭𐴮𐴯𐴰𐴱𐴲𐴳𐴴𐴵𐴶𐴷𐴸𐴹𐴺𐴻𐴼𐴽𐴾𐴿𐵀𐵁𐵂𐵃𐵄𐵅𐵆𐵇𐵈𐵉𐵊𐵋𐵌𐵍𐵎𐵏𐵐𐵑𐵒𐵓𐵔𐵕𐵖𐵗𐵘𐵙𐵚𐵛𐵜𐵝𐵞𐵟𐵠𐵡𐵢𐵣𐵤𐵥𐵦𐵧𐵨𐵩𐵪𐵫𐵬𐵭𐵮𐵯𐵰𐵱𐵲𐵳𐵴𐵵𐵶𐵷𐵸𐵹𐵺𐵻𐵼𐵽𐵾𐵿𐶀𐶁𐶂𐶃𐶄𐶅𐶆𐶇𐶈𐶉𐶊𐶋𐶌𐶍𐶎𐶏𐶐𐶑𐶒𐶓𐶔𐶕𐶖𐶗𐶘𐶙𐶚𐶛𐶜𐶝𐶞𐶟𐶠𐶡𐶢𐶣𐶤𐶥𐶦𐶧𐶨𐶩𐶪𐶫𐶬𐶭𐶮𐶯𐶰𐶱𐶲𐶳𐶴𐶵𐶶𐶷𐶸𐶹𐶺𐶻𐶼𐶽𐶾𐶿𐷀𐷁𐷂𐷃𐷄𐷅𐷆𐷇𐷈𐷉𐷊𐷋𐷌𐷍𐷎𐷏𐷐𐷑𐷒𐷓𐷔𐷕𐷖𐷗𐷘𐷙𐷚𐷛𐷜𐷝𐷞𐷟𐷠𐷡𐷢𐷣𐷤𐷥𐷦𐷧𐷨𐷩𐷪𐷫𐷬𐷭𐷮𐷯𐷰𐷱𐷲𐷳𐷴𐷵𐷶𐷷𐷸𐷹𐷺𐷻𐷼𐷽𐷾𐷿𐸀𐸁𐸂𐸃𐸄𐸅𐸆𐸇𐸈𐸉𐸊𐸋𐸌𐸍𐸎𐸏𐸐𐸑𐸒𐸓𐸔𐸕𐸖𐸗𐸘𐸙𐸚𐸛𐸜𐸝𐸞𐸟𐸠𐸡𐸢𐸣𐸤𐸥𐸦𐸧𐸨𐸩𐸪𐸫𐸬𐸭𐸮𐸯𐸰𐸱𐸲𐸳𐸴𐸵𐸶𐸷𐸸𐸹𐸺𐸻𐸼𐸽𐸾𐸿𐹀𐹁𐹂𐹃𐹄𐹅𐹆𐹇𐹈𐹉𐹊𐹋𐹌𐹍𐹎𐹏𐹐𐹑𐹒𐹓𐹔𐹕𐹖𐹗𐹘𐹙𐹚𐹛𐹜𐹝𐹞𐹟𐹠𐹡𐹢𐹣𐹤𐹥𐹦𐹧𐹨𐹩𐹪𐹫𐹬𐹭𐹮𐹯𐹰𐹱𐹲𐹳𐹴𐹵𐹶𐹷𐹸𐹹𐹺𐹻𐹼𐹽𐹾𐹿𐺀𐺁𐺂𐺃𐺄𐺅𐺆𐺇𐺈𐺉𐺊𐺋𐺌𐺍𐺎𐺏𐺐𐺑𐺒𐺓𐺔𐺕𐺖𐺗𐺘𐺙𐺚𐺛𐺜𐺝𐺞𐺟𐺠𐺡𐺢𐺣𐺤𐺥𐺦𐺧𐺨𐺩𐺪𐺫𐺬𐺭𐺮𐺯𐺰𐺱𐺲𐺳𐺴𐺵𐺶𐺷𐺸𐺹𐺺𐺻𐺼𐺽𐺾𐺿𐻀𐻁𐻂𐻃𐻄𐻅𐻆𐻇𐻈𐻉𐻊𐻋𐻌𐻍𐻎𐻏𐻐𐻑𐻒𐻓𐻔𐻕𐻖𐻗𐻘𐻙𐻚𐻛𐻜𐻝𐻞𐻟𐻠𐻡𐻢𐻣𐻤𐻥𐻦𐻧𐻨𐻩𐻪𐻫𐻬𐻭𐻮𐻯𐻰𐻱𐻲𐻳𐻴𐻵𐻶𐻷𐻸𐻹𐻺𐻻𐻼𐻽𐻾𐻿𐼀𐼁𐼂𐼃𐼄𐼅𐼆𐼇𐼈𐼉𐼊𐼋𐼌𐼍𐼎𐼏𐼐𐼑𐼒𐼓𐼔𐼕𐼖𐼗𐼘𐼙𐼚𐼛𐼜𐼝𐼞𐼟𐼠𐼡𐼢𐼣𐼤𐼥𐼦𐼧𐼨𐼩𐼪𐼫𐼬𐼭𐼮𐼯𐼰𐼱𐼲𐼳𐼴𐼵𐼶𐼷𐼸𐼹𐼺𐼻𐼼𐼽𐼾𐼿𐽀𐽁𐽂𐽃𐽄𐽅𐽆𐽇𐽋𐽍𐽎𐽏𐽐𐽈𐽉𐽊𐽌𐽑𐽒𐽓𐽔𐽕𐽖𐽗𐽘𐽙𐽚𐽛𐽜𐽝𐽞𐽟𐽠𐽡𐽢𐽣𐽤𐽥𐽦𐽧𐽨𐽩𐽪𐽫𐽬𐽭𐽮𐽯𐽰𐽱𐽲𐽳𐽴𐽵𐽶𐽷𐽸𐽹𐽺𐽻𐽼𐽽𐽾𐽿𐾀𐾁𐾃𐾅𐾂𐾄𐾆𐾇𐾈𐾉𐾊𐾋𐾌𐾍𐾎𐾏𐾐𐾑𐾒𐾓𐾔𐾕𐾖𐾗𐾘𐾙𐾚𐾛𐾜𐾝𐾞𐾟𐾠𐾡𐾢𐾣𐾤𐾥𐾦𐾧𐾨𐾩𐾪𐾫𐾬𐾭𐾮

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ



ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

ପ୍ରସନ୍ନ
ପ୍ରସନ୍ନ

कहेतवे॥ नमः श्रीनाथै॥ ध्या
यः भवेत्तद्विद्यायिने॥ आप
दादुरितं रोगासममो गारुध
नीत्॥ सर्वे च भव्यो हंतु दिव्य
स्वस्त्यमेलनात्॥ संपुत्र्यका नो
प्रतिपात्तकानां जितेन्द्रियाणां च
तपोधनानां॥ देवस्य एष्टु स्य कल
त्यरासे करोतु शान्तिं भगवान्क
शाप्याशमाज्ञाप भावेन संस्थिता
भुवनत्रयं॥ नन्दंतु साधका सिद्धिं न
न्दंतु कुलयोगिनः॥ नन्दंतुः श्रीकुला
शायी ये चानेन नमोस्तुते॥ देहि न
मुषि न संतु सुखासीनस्तु देहवत॥ प्रसा
दंतु च दास्य चरणां जीवधाराम्
इति श्रीपञ्चतन्त्रविक्रमसप्तम

वाक्यं॥ काश्यपजो नयमानस्य
- नामधेयस्य एतु सिद्धि त्रय को प्र

नार्थमहाष्टमी पार्कराय पंथो पय
रक्षी इत्यनराष्ट्रदेवार्चन संपुराणि र्थं
पथमकुर्वन्कं भामिमित्रार्थं सकल
परिगाराणं आशु रागेभ्य मैत्र्यार्थं
नधन्त्येक्षी संतति संता न हृदिर
स्तु यथा सा ह्योक्तं फल प्राप्तिरस्तु॥
विन्दु३॥ नयंति देवीस्तु प्रसन्नोस्तु॥

अथ पञ्चमं त्रयमिच्छिष्यते ॥

प्रथमा ॥ ॥ रेवे नित ॥ ॥ ऐं प्रीति प्रीति ॥

दि ॥ ॥ ॥ ॥ द्वितीया ॥ ॥ चला ॥ ॥

॥ अष्टाविंशतमस्य धारः मष्टाविंशतः

तिमगुले ॥ वीरचक्रस्थिता देवी अष्टा

ष्टकनमोस्तुते ॥ नमस्ते चक्रमध्यस्थ

नमस्ते ज्ञानदायक ॥ नमस्ते भैरवंक

पं नमस्ते भवतारक ॥ अष्टाष्टकतु

योगिन्या बहुकानां तथैव च ॥ भैरवा

नासिदं चक्रमेकाकारं तन्मा भ्य हं ॥ व

॥ ॥ तृतीया ॥ पंचाङ्गा ॥ ॥

॥ अविनाशो भवेदेह अजरामरमे

वच ॥ महावज्रवर्णं देहं रागः श्रीकां

तिवर्द्धनं ॥ शत्रुनाशो यशोवृद्धिः रा

गुष्ठीपुष्टिवर्द्धनं ॥ महाप्रसिद्धिर्भव

तस्य लक्ष्मीतस्य च कर्द्धनं ॥ रसाय

नोयं सर्वस्य देवते पञ्च निमित्तं ॥ प

रामुतरसं दिव्यपीयतां भव भैवजं ॥ न

दनुकुलयोगिन्या नन्दनुकुलप्रव

का ॥ नन्दनुष्ठीकुलाचार्यो ये च

ने च नमोस्तुते ॥ ॥ चतुर्थ ॥ ॥

वंदेलुलभा ॥ ऐं मन्त्रमासं महाभासं

भाक्ते ॥ यजनकं चतु ॥ षट्प्रकारज

ना देवी कुत्रिकाख्य नमाम्य ह ॥ ॥

पञ्चम ॥ ओ पालु ॥ ऐं अयंति देव्या

हरपादपंकजं प्रशन्नवामी मृतमोक्ष

दायकं अननसिद्धान्तमभिप्रमोद

कं नमामि चाष्टाष्टकजोगिनी जन

योगिनी ह्येकसहितं गान्धर्वमुत्तमं

तं ॥ भनादि चोत्तमं सारं व्याधि चंसे

